International Journal of Humanities and Social Science Research
www.socialsciencejournal.in
ISSN: 2455-2070
Received: 23-06-2022, Accepted: 09-07-2022, Published: 24-07-2022
Volume 8, Issue 4, 2022, Page No. 56-58

अध्यापक शिक्षा में (NAAC) नैक (राष्ट्रीय मूल्यांकन एवं प्रत्यायन परिषद्) की भूमिका

मनीषा पन्त[1], दिनेश चन्द्र काण्डपाल[2]
[1] उत्तराखण्ड मुक्त विश्वविद्यालय, हल्दवानी, उत्तराखण्ड, भारत
[2] सहायक प्राध्यापक, उत्तराखण्ड मुक्त विश्वविद्यालय, हल्दवानी, उत्तराखण्ड, भारत

सारांश
राष्ट्रीय विकास की प्रक्रिया में शिक्षा की महत्वपूर्ण भूमिका रहती है। शिक्षा के द्वारा समाज में परिवर्तन होता है। स्वतत्रंता से पूर्व देश में पूर्ण रूप से प्रशिक्षित शिक्षकों का होना बहुत बड़ी समस्या थी। और स्वतत्रंता प्राप्ति के पश्चात अनेक आयोगों ने अध्यापक शिक्षा में सुधार हेतु सुझाव दिये। इस दिशा में सरकार द्वारा सबसे ठोस कदम 1993 में संसद द्वारा एक अधिनियम पारित करा कर NCTE की स्थापना करना था। देश के भावी नागरिकों के निर्माण का उत्तरदायित्व अध्यापक पर ही है। अतः शिक्षकों का योग्य व प्रशिक्षित होना अत्यन्त आवश्यक है। अध्यापक शिक्षण संस्थानों की गुणवत्ता के मूल्यांकन एवं प्रत्यायन हेतु राष्ट्रीय मूल्यांकन एवं प्रत्यायन परिषद् (नैक) की स्थापना की गयी। नैक द्वारा अध्यापक प्रशिक्षण संस्थानों के भौतिक संसाधन व माननीय संसाधनों का मूल्यांकन कर उन्हें अनुदान दिया जाता है। अध्यापक –प्रशिक्षण संस्थानों के गुणवत्ता संवर्धन हेतु 16 अगस्त 2002 को NCTE एवं NAAC के बीच एक समझौता ज्ञापन (MOU) किया गया। समझौते के पश्चात NCTE तथां NAAC ने मिलकर अध्यापक–प्रशिक्षण संस्थानों के स्व आंकलन हेतु एक मैनुअल निर्मित किया गया। नैक द्वारा ग्रेडिंग देने का मुख्य उद्देश्य यह जानना है कि कोई भी अध्यापक शिक्षण संस्थान अनुदान प्राप्त करने की स्थिति में है अथवा नहीं। यह शिक्षा की गुणवत्ता एवं उत्कृष्टता में सुधार लाने की एक प्रक्रिया है। किसी भी नए अध्यापक प्रशिक्षण संस्थान को मान्यता तब प्रदान की जाती है जब वह इन सभी निर्धारित मानदंड़ों को पूरा करते हैं। तथा पुराने अध्यापक –प्रशिक्षण संस्थानों की भी NAAC द्वारा निर्धारित मानदण्ड को पूरा करना अनिवार्य है। अतः अध्यापक–प्रशिक्षण संस्थानों की गुणवत्ता को बनाए रखने में NAAC की महत्वपूर्ण भूमिका है।

मूल शब्दः (NAAC) नैक, NCTE, अध्यापक शिक्षा, गुणवत्ता

प्रस्तावना

शिक्षा एक ऐसा माध्यम है, जो अपनी सशक्त भूमिका से समाज को परिमार्जित एवं परिष्कृत करती है। अतः ऐसी स्थिति में एक योग्य शिक्षक का होना आवश्यक है। जिसमें उत्तम शिक्षण विधियॉ, सहायक उपागम के प्रयोग की जानकारी एवं योग्यता हो। अतः ऐसे शिक्षकों को गुणवता युक्त होने के लिए भी व्यापक शिक्षण एवं प्रशिक्षण की आवश्कता होती है। अतः कुशल शिक्षण के निर्माण हेतु सुगठित, सुनियोजित एवं उपयुक्त शिक्षक शिक्षा का होना आज की आवश्यकता है। गुणवता में सुधार लाने के लिए शिक्षकों का क्षमता निर्माण और उन्हें अभिप्रेरित करना आवश्यक है। जिसके लिए अध्यापक शिक्षा संस्थाओं का उच्च कोटि का होना आवश्यक है।

अध्यापक शिक्षा में नैक की भूमिका

प्राचीन काल में केवल ब्राहमण वर्ग ही समाज को शिक्षित बनाने का कार्य करता था। वह ज्ञानार्जन तथा ज्ञान प्रदान करना अपना मुख्य कर्तव्य समझता था। वैदिक काल में ब्राहमण विद्या दान कर अपना जीविकोपार्जन करते थे। उस समय प्रशिक्षण प्रदान करने वाली कोई औपचारिक संस्था नहीं थी। इस काल में यह अनुवांशिक प्रक्रिया थी। शिक्षण व्यवसाय एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी को प्राप्त होता था। डा0 आर0 वी0 सिंह के अनुसार, इस काल में ब्राहमण परिवारों में वंशानुक्रम से ही शिक्षण कार्य होता था। इस काल में शिक्षण प्रशिक्षण की कोई औपचारिक व्यवस्था नहीं थी।

बौद्धिक काल में अध्यापक शिक्षा के महत्व को जान लिया गया था। इसी समय यह धारणा बनी की शिक्षण का व्यवसाय केवल ब्राह्मणों की धरोहर नहीं है वरन कोई भी वर्ग या समुदाय का कोई भी प्रतिभाशाली व्यक्ति प्रशिक्षणोपरान्त अध्यापक बन सकता है। इस प्रकार औपचारिक अध्यापक शिक्षण की शुरूआत इस काल से हुई। इसके पश्चात मुस्लिम काल में अध्यापक शिक्षण की कोई औपचारिक व्यवस्था नहीं थी। शिक्षा एक जनकार्य थी। केवल मौलवी ही अध्यापक के रूप में कार्य करते थे। ब्रिटिश काल में सन् 1819 में बंगाल के कलकत्ता स्कूल ने समाज में लैनफ्रास्टीयन व्यवस्था को शिक्षकों को प्रशिक्षण देने के लिए शुरू किया गया। सर्वप्रथम थामस मुनरो ने सन् 1826 में शिक्षण प्रशिक्षण के क्षेत्र में योजनाबद्ध प्रयास किया। इसके पश्चात् हर्टाग कमीशन ने सन् 1882 में प्राथमिक शिक्षा में सुधार एवं शिक्षकों के लिए प्रशिक्षण विद्यालयों की व्यवस्था पर बल दिया कुछ नार्मल स्कूलों को स्थापित किया। परन्तु माध्यमिक प्रशिक्षण संस्थाओं की ओर विशेष ध्यान नहीं दिया। 19वीं शताब्दी के अन्त में देश में मद्रास, लाहौर, राजामुन्दी, करसियांग, जबलपुर, इलाहाबाद में छः प्रशिक्षण कालेज थे। माध्यमिक अध्यापकों के लिए पचास प्रशिक्षण विद्यालय थे। लार्ड कर्जन ने शिक्षा और अध्यापक प्रशिक्षण की आवश्यकता पर विशेष महत्व दिया। उन्होंने कहा ”यदि विद्यालयी शिक्षा को अधिक प्रभावशाली बनाना है तो अध्यापकों को अच्छी प्रकार से प्रशिक्षित होना चाहिए।” इसी प्रकार धीरे–धीरे अध्यापक प्रशिक्षण के बारे में प्रत्येक आयोग में कुछ न कुछ सुधार होते रहे।

स्वतन्त्रता प्राप्ति के पश्चात् देश में कई नए सामाजिक परिवर्तन हुए तथा यह माना गया कि अध्यापक शिक्षा केवल अध्यापक प्रशिक्षण ही नहीं है। इसमें स्नातक अध्यापकों की आवश्यकता होगी। इस मॉग को पूरा करने के लिए आयोग ने अधिक प्रशिक्षण कॉलेजों को शुरू करने पर जोर दिया। वर्तमान में NCTE का गठन 1993 में अध्यापक शिक्षा के लिए मील का पत्थर साबित हुआ। अपने उद्देश्यों अध्यापक शिक्षण संस्थानों के उन्नयन तथा अवसंरचनात्मक विकास एवं शिक्षकों के अकादमिक संवर्धन एवं विकास हेतु ठम्क, ड.म्क पाठ्यक्रमों को शामिल किया गया। वर्तमान में देश भर में 600 संस्थानों को केन्द्रीय सरकार द्वारा वित्तीय सहायता प्राप्त है। जिसे 2020 तक बढ़ाकर 1000 करने की अनुशंसा है। क्प्म्ज, ब्ज्म् आदि संस्थान भी अध्यापक शिक्षण के लिए महत्वपूर्ण कार्य कर रहे है।
अध्यापक–प्रशिक्षण संस्थानों के गुणवत्ता संवर्धन हेतु 16 अगस्त 2002 को NCTE एव NAAC के बीच एक समझौता ज्ञापन (डव्) किया गया गया। समझौते के पश्चात NCTE तथां NAAC ने मिलकर अध्यापक–प्रशिक्षण संस्थानों के स्व आंकलन हेतु एक मैनुअल निर्मित किया गया। NCTE के अनुसार सभी संबधित बी. एड. कॉलेज तय समयाविधि में ग्रेंडिग का कार्य सम्पन्न करवा लें। नहीं तो ग्रेंडिग प्रक्रिया का समयावधि पर पूरा नहीं करने वाले कॉलेजों के खिलाफ कार्यवाही की जाएगी। NAAC के अनुसार ग्रेंडिग के मापदंड तैयार किए गए है। जिनके अनुसार हर कॉलेज की ग्रेड तय होगी तथा ग्रेंडिग तय पैरामीटर्स के आधार पर दी जाएगी। NCTE का मानना है कि नैक ग्रेंडिग से जुगाड़ पर चल रहे बी.एड. कॉलेजों की वास्तविक स्थिति सामने आएगी।

राष्ट्रीय मूल्याकंन एवं प्रत्यायन परिषद (NAAC) की भूमिका (Role of NAAC).
राष्ट्रीय मूल्याकंन एवं प्रत्यायन परिषद (NAAC) देश में उच्च शिक्षा संस्थानों को एक्रीडिटेशन प्रदान करने वाली एकमात्र संस्था है। इससे पहले देश में शिक्षा संस्थाओं की एक्रीडिटेशन (ग्रेडिंग) एच्छिक था। नैक एक संस्थान है जो भारत के उच्च शिक्षा संस्थाओं का मूल्याकंन तथा प्रत्यायन का कार्य करती है। इसकी स्थापना 1994 में की गई थी।नैक द्वारा मूल्याकंन एवं प्रत्यायन मुख्यतः किसी भी शैक्षिक संस्था की गुणवत्ता स्थिति को समझने के लिए प्रयोग किया जाता है।
नैक का उद्देश्यरू –

1. उच्च शिक्षा संस्थानों या विशिष्ट शैक्षणिक कार्यक्रमों या परियोजनाओं के आवधिक मूल्यांकन और मान्यता के लिए व्यवस्था करना।
2. उच्च शिक्षा संस्थानों में शिक्षण और अनुसंधान की गुणवत्ता को बढ़ाने के लिए शैक्षणिक वातावरण को प्रोत्साहित करना।
3. उच्च शिक्षा में संबधित अनुसंधान अध्ययन, परामर्श और प्रशिक्षण कार्यक्रम, स्व–मूल्यांकन, जवाबदेही, स्वायत्तता और नवचारों को प्रोत्साहित करना।
4. गुणवत्ता से संबधित अनुसंधान अध्ययन परामर्श और प्रशिक्षण कार्यक्रम और गुणवत्ता मूल्यांकन, पदोन्नति और जीविका के लिए उच्च शिक्षा के अन्य हितदारों के साथ सहयोग करना।

NAAC के गुणवत्ता के मापदंडः नैक के गुणवत्ता के मानदंड निम्नलिखित है।

5. शैक्षिक प्रक्रियाओं में संस्था का प्रदर्शन।
6. पाठ्यक्रम चयन एवं कार्यान्वयन।
7. शिक्षण, अधिगम एवं मूल्यांकन तथा छात्रों के परिणाम।
8. संकाय सदस्यों का अनुसंधान कार्य एवं प्रकाशन।
9. बुनियादी सुविधाएं तथा संसाधनों की स्थिति।
10. संगठन प्रशासन व्यवस्था।
11. आर्थिक स्थिति तथा छात्र सेवाएं।

इन्हीं मानदण्डों के आधार पर नैक अध्यापक शिक्षण संस्थाओं को ग्रेड प्रदान करती है। ग्रेड के आधार पर ही अध्यापक शिक्षण संस्थाओं को NCTE द्वारा पाठ्यक्रम संचालित करने की अनुमति दी जाती है। वास्तव में नैक मूल्यांकन यह निर्धारित करता है कि कोई भी शैक्षिक संस्थान प्रमाणन एजेन्सी के द्वारा निर्धारित गुणवत्ता के मानकों को किस स्तर तक पूरा कर रहा है।

NAAC मूल्यांकन
कैसे होता है मूल्याकंनः राष्ट्रीय मूल्याकंन एवं प्रत्यायन परिषद (नैक) विश्वविद्यालय अनुदान आयोग की शाखा है जो विश्वविद्यालय एवं कॉलेजों की गुणवत्ता का विभिन्न आधारों पर मूल्याकंन करता है। संसाधन एवं परफार्मेंस के आधार पर नैक विश्वविद्यालयों एवं कॉलेजों को ग्रेड देता है। इसका फायदा कॉलेजों को यूजीसी द्वारा अनुदान प्राप्त करने में होता है। नैक मूल्यांकन के लिए जिन कॉलेजों ने अपनी स्थापना के तीन वर्ष पूरे कर लिए हैं या जिनके यहाँ डिग्री पाठ्यक्रम के दो बैच निकल चुके है वह आवेदन कर सकते है। सबसे पहले विवि या कॉलेज नैक को लेटर ऑफ इंटेंट (एलओआई) भेजता है। इसके बाद निर्धारित प्रोफार्मा पर आईईक्यू (इस्टीट्यूशनल एलिजिबिलिटी फॉर क्वालिटी एसंसमेंट) के लिए आवेदन करता है। इस पर नैक की सहमति मिलने के बाद छः महीने के भीतर कॉलेज को सेल्फ स्टडी रिपोर्ट भेजनी होती है। जिसमें कॉलेज के शिक्षक,वित्तीय एवं प्रशासनिक गतिविधियों से जुड़े समस्त विवरण का उल्लेख होता है। इसके बाद नैक की 'पीयर टीम' सेल्फ स्टडी रिपोर्ट के आधार पर कॉलेज का निरीक्षण करती है और ग्रेड प्रदान करती है।
कॉलेज जो सेल्फ स्टडी रिपोर्ट तैयार करता है उसे दो भागों में बांटा जा सकता है। पहले में आधारभूत सुविधाओं को तथा दूसरे में शैक्षणिक गतिविधियों को शामिल किया जा सकता है। आधारभूल ढांचे में कॉलेज की प्रोफाइल, वित्तीय सहयोग, मान्यता की स्थिति, लोकेशन, संचालित पाठ्यक्रम एवं विभाग, शैक्षिक लागत की जानकारी देनी होती है। शैक्षणिक गतिविधियों में कॉलेज का विजन, स्ववित्तपोषित पाठ्यक्रम, शुल्क, सेमेस्टर, वार्षिक या पार्टटाइम कोर्सेज, पाँच

वर्षों में शुरू किए गए कोर्स, सिलेबस रिवीजन, प्रोजेक्ट वर्क, अभिभावक छात्रों या शिक्षाविदों से फीडबैक का सिस्टम, प्रवेश प्रक्रिया, क्वालीफाइंग मार्क्स, शैक्षणिक कार्य दिवस, पदों की स्थिति, छात्र–शिक्षक अनुपात, शिक्षकों की योग्यता, फैकल्टी डवलपमेंट प्रोग्राम, रेमेडियल एवं ब्रिज कोर्स, शोध कार्य, रिसर्च पब्लिकेशन, एनसीसीध्एनएसएस आदि गतिविधियां, पुस्तकालय एवं उसमें शिक्षकों एवं छात्रों की उपस्थिति की स्थिति, पुस्तकों के प्रकार एवं संख्या, छात्रों का ड्रापआउट रेट, छात्रों के लिए वित्तीय सहयोग, सह शैक्षणिक गतिविधियां, परीक्षा परिणाम, नेट आदि प्रतियोगी परीक्षाओं में चयन, प्रशासन एवं नेतृत्व क्षमता आदि शमिल है।

तैयारी

विजनः कॉलेज का अपना विजन एवं आब्जेक्टिव होना चाहिए तथा कॉलेज के महत्वपूर्ण स्थलों पर उसे प्रदर्शित किया जाए।

आधारभूत संसाधनः ऑनलाइन लाइब्रेरी, छात्रों के लिए रीडिंग रूम, महिला शिक्षकों की लिए रेस्ट रूम, गर्ल्स कॉमन रूम, विभागीय कक्ष, कैंटीन, पार्किंग, कम्प्यूटर लैब आदि में सुधार।

शैक्षणिक गतिविधियांः हर शिक्षक का एनवल टीचिंग प्लान, मंथली टीचिंग रिपोर्ट, ट्यूटोरियल एवं एक्स्ट्रा क्लासेज, स्टूडेंट्स फीड बैक, आई टी तकनीक का प्रयोग, सभी छात्रों के लिए बेसिक कम्प्यूटर शिक्षा।

सह शैक्षणिक गतिविधियांः– कॉलेज सेल्फखेल कार्यक्रम, एनसीसीध्एनएसएस की गतिविधियां, पूर्व छात्र परिषद, अभिभावक–शिक्षक संघ, कॅरिअर काउंसलिग सेल, छात्र समस्या समाधान सेल आदि का गठन।

डाक्यूमेंटेशनः सभी शैक्षिणक, सह शैक्षिणक गतिविधियों एवं उपलब्धियों का समुचित दस्तावेज जिसे नैक के समक्ष रखा जा सकें।

IQAC की स्थापना उच्च शिक्षण संस्थाओं में NAAC द्वारा मूल्यांकन के पश्चात् शिक्षा की गुणवता में सुधार के लिए की जाती है। IQAC का मुख्य कार्य ऐसी व्यवस्था को विकसित करना है जो शैक्षिक संस्थाओं के निष्पादन में तत्पर, निरन्तर एवं उत्प्रेरक सुधार करने में सहायक सिद्ध हो। NAAC ने अपने कार्य योजना के अनुसरण में शैक्षिक संस्थानों के उन्नयन एवं राष्ट्रीय मूल्यांकन एवं प्रत्यायन के अनुसार प्रत्येक मान्यता प्राप्त संस्थान को एक आंतरिक गुणवत्ता आश्वासन सेल (IQAC) को एक पोस्ट मान्यता गुणवत्ता निर्वाह के रूप में स्थापित करना चाहिए। चूंकि गुणवत्ता वृद्धि एक निरन्तर प्रक्रिया हैं इसलिए IQAC संस्था की प्रणाली का एक हिस्सा बन जाएगा और गुणवत्ता वृद्धि और जीविका के लक्ष्यों की प्राप्ति में कार्य करेगा। IQAC का मुख्य कार्य संस्थानों के समग्र प्रर्दशन में सचेत, सुसंगत और उत्प्रेरक सुधार के लिए एक प्रणाली विकसित करना है। इसके लिए मान्यता के बाद भी अवधि के लिए यह संस्थान के सभी प्रयासों और उपायों को बढ़ावा देगा।

IQAC के लक्ष्य

1. संस्था के शैक्षणिक और प्रशासनिक प्रर्दशन में सुधार के लिए सचेत, सुसंगत और उत्प्रेरक कार्यवाही के लिए एक प्रणाली विकसित करना।
2. गुणवत्ता संस्कृति के आंतरिकीकरण को सुनिश्चित करना गुणवत्ता बढ़ाने के लिए संस्थागत कामकाज में स्पष्टता और फोकस के स्तर को सुनिश्चित करना।

निष्कर्ष

NAAC हमारे शिक्षण संस्थानों की गुणवत्ता में सुधार करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। शिक्षण संस्थानों के अकादमिक संवर्धन एवं गुणात्मक रूप से उन्नयन के लिए महत्वपूर्ण कार्य करता है। क्योंकि NAAC के द्वारा ग्रेड के आधार पर संस्थानों को यू.जी.सी. द्वारा अनुदान दिया जाता है तथा उन्हें पाठ्क्रम संचालित करने हेतु मान्यता दी जाती हैं। NAAC के द्वारा मान्यता प्रक्रिया में अभूतपूर्व प्रयास किए गए है जो संस्था का एक सूचित समीक्षा के माध्यम से इसकी ताकत, कमजोरियां एवं अवसरों को जानने में मदद करता है। IQAC की स्थापना के लिए $SLQAC_S$ को अपने–अपने राज्यों में सभी मान्यता प्राप्त संस्थानों को सकारात्मक रूप से कार्य करने और प्रेरित करने की आवश्यकता है। तथा बाहरी गुणवत्ता मूल्याकंन और आंतरिक गुणवत्ता मूल्याकंन में आंतरिक गुणवत्ता आश्वासन पर अधिक भरोसा सही मायने में किया जा सकता है। ताकि संस्थान की गुणवत्ता सही मायने में सुनिश्चित की जा सके।

सन्दर्भ

1. वशिष्ठ, के. के. (1979)। भारत में शिक्षक शिक्षा, कॉन्सेप्ट पब्लिशिंग कंपनी नई दिल्ली।
2. http// www/ugc-ac/in/oldpdt/Ûiplanpdt/IQAC guidelines-pdt
3. rjhssonline-com role of naac for quality expansion in teacher education
4. http// www-naac-gov-in
5. श्रीवास्तव,आरती (1997), भारत में शिक्षक शिक्षा मुद्दे एवं परिप्रेक्ष्य। रीथेंसी पब्लिकेशन,नई दिल्ली।
6. UGC (2007) ÞGuidelines for the Establishment and Monitoring of the Internal Quality Assurance Cells
7. (IQACs) in Higher Educational Institutions (HEIs) Retrieved from http://www-ugc-ac-in/oldpdf/Ûiplanpdf/IQACguidelines-pdf